भ्रूण को याद रहता है मां का नशा

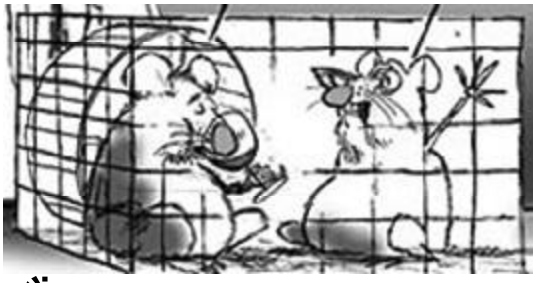

चौंकने की कोई बात नहीं है, बात चूहों की हो रही है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि यदि गर्भावस्था के समय मां ने शराब के घूंट पीए हों, तो उसके बच्चों को अल्कोहल मीठा लगता है। वास्तव में अल्कोहल का स्वाद कड़वे और मीठे का मिला-जुला स्वाद होता है। वैज्ञानिकों का विचार है कि इस अवलोकन से इस बात की व्याख्या करने में मदद मिलेगी कि क्यों मनुष्यों में भ्रूणावस्था के दौरान अल्कोहल से संपर्क होने पर बच्चे में अल्कोहल के प्रति लगाव होने की ज़्यादा संभावना होती है।

न्यूयॉर्क स्टेट विश्वविद्यालय के स्टीवन यंगेनटोब और उनके साथी यह देखना चाहते थे कि क्या भ्रूणावस्था में अल्कोहल से संपर्क होने पर स्वाद का एहसास बदल जाता है। लिहाज़ा उन्होंने कुछ चुहियाएं लेकर उनमें से कुछ को गर्भावस्था के दौरान शराब की खुराक दी जबकि कुछ चुहियाओं पर साकी की नज़रे इनायत नहीं हुई।

इनके बच्चों को तीन तरह के तरल पदार्थ दिए गए। एक में अल्कोहल था, एक में मीठा पानी और तीसरे में कड़वा पानी। देखा गया कि गर्भावस्था में जिन चुहियाओं को अल्कोहल की खुराक मिली थी उनके बच्चे अल्कोहल और कड़वा पानी ज़्यादा चाव से पीते थे। हालांकि मीठे पानी के मामले में दोनों तरह के बच्चों का लगाव एक-सा ही था। 'शराबी' चुहियाओं के बच्चों को अल्कोहल की गंध भी ज़्यादा भाती थी।

शोधकर्ताओं का कहना है कि भ्रूणावस्था में शराब से संपर्क से चूहे कड़वे स्वाद से परिचित हो जाते हैं। इसकी वजह से उनमें कड़वे के प्रति संवेदनशीलता बोथरी पड़ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि इन्हें अल्कोहल का मीठा स्वाद ही महसूस होता है।

शोधकर्ताओं का यह भी कहना है कि ये अनुभूतियां जीवन भर के लिए निर्धारित हो जाती हैं। सिर्फ एक वजह से इनमें फर्क आ सकता है। वह यह है कि यदि जन्म के बाद काफी समय तक इन चूहों का संपर्क अल्कोहल से न हो, तो अल्कोहल के प्रति उनका लगाव समाप्त हो जाता है। निष्कर्ष रूप में वे कहते हैं कि इसका मतलब है कि बच्चों को जब तक संभव हो, शराब से दूर रखना चाहिए। वैसे भ्रूणावस्था में खुराक सम्बंधी पसंद-नापसंद का संतान को स्थानांतरण जैव विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि इससे बच्चे को पूर्वाभास हो जाता है कि कौन-सी चीज़ें खाने योग्य हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***